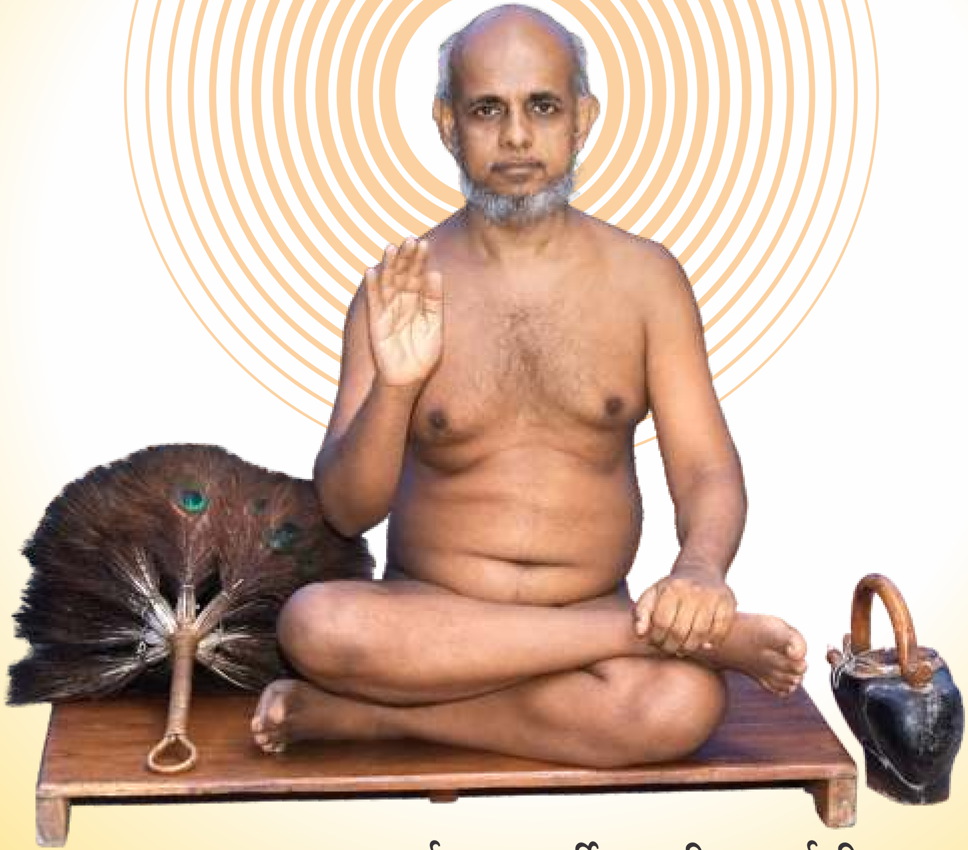

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद पुरन्दर व्रत विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

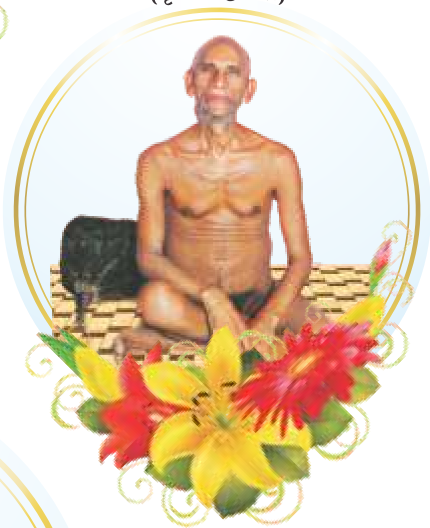

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

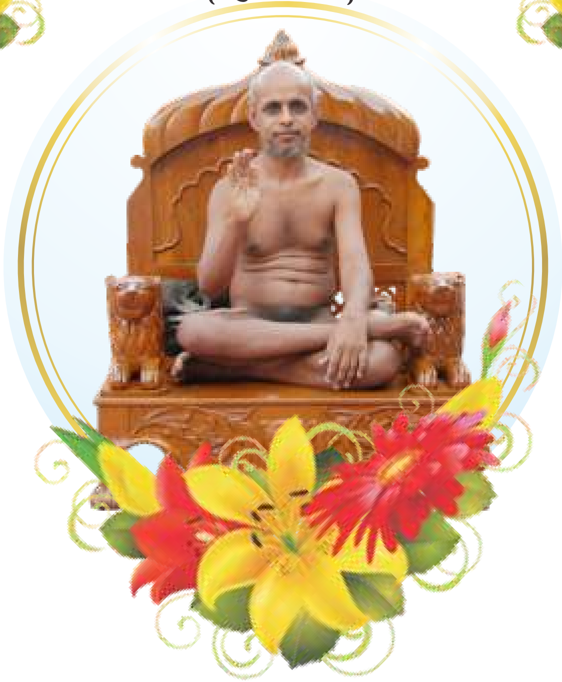

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
पुरन्दर व्रत विधान

आचार्य सकलकीर्ति द्वारा रचित विधान के आधार पर

माण्डला

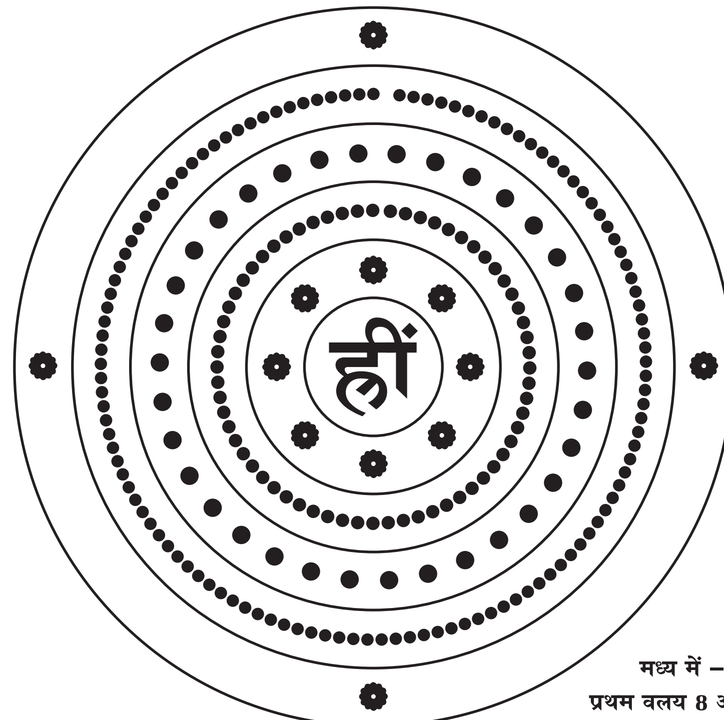

मध्य में – ह्रीं
प्रथम वलय 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय 64 अर्घ्य
तृतीय वलय 34 अर्घ्य
चतुर्थ वलय 120 अर्घ्य
पंचम वलय 4 अर्घ्य
कुल 230 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : विशद पुरन्दर व्रत विधान
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, क्षु. श्री वात्सल्य भारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085
संयोजन : ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी 9660998425,
: ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य : रु. 21/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : 1. **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

2. **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली,
नियर लाल बत्ती चौक
गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971

3. **सुरेश सेठी**
पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,
दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017

-: अर्थ सौजन्य :-

सकल दिगम्बर जैन समाज झिराना
भव्य कलशा रोहण एवं क्षेत्रपाल, पद्मावती स्थापना समारोह
के उपलक्ष्य में 12-13 मई, 2016

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

पुरन्दर व्रत कथा

दोहा- दोष अठारह से रहित, विमलनाथ भगवान।
सुर नर मुनि से पूज्य हैं, जिन पद विशद प्रणाम॥

सौधर्म इन्द्र देव एवं मनुष्यों से पूजित, अठारह दोषों से रहित श्री विमलनाथ भगवान के श्री चरणों में नमस्कार करता हूँ।

पुष्करार्ध द्वीप की पूर्व दिशा में अनेक वन वापियों से युक्त अपनी आभा से लोगों के मन को मुग्ध करने वाला सुन्दर मंदिर मेरू है जो अनेक सुन्दर एवं विशाल जिनबिम्बों से सुशोभित है। जहाँ अनेक देवी, देवता निवास करते थे। उस मंदिर के सुन्दर उद्यान में मुनिराज भी साधना हेतु ठहरते थे। वहाँ विद्याधर भी आते रहते थे। उसी उद्यान में जब भगवान श्री महावीर का समवशरण आया तब राजा श्रेणिक ने भगवान को नमस्कार कर प्रश्न किया। हे प्रभु! यह संसार असार है, दुखमय है, कोई भी वस्तु नित्य नहीं है, सभी विनाशशील हैं, एक धर्म ही सार है। इसलिए हमें श्रावक धर्म का पालन करने हेतु उपाय बताएँ। तब भगवान की दिव्य ध्वनि खिरी एवं गौतम गणधर ने स्पष्ट किया कि सभी व्रतों में श्रेष्ठ पुरन्दर व्रत है, उस व्रत के करने से संसारिक सुख एवं स्वर्ग मोक्ष की प्राप्ति होती है।

एक समय की बात है भारत देश की दक्षिण दिशा में रम्यक् देश में अनेक पुर, दुर्ग, द्रोण, ग्राम, खेट, पट्टन आदि से सहित पृथ्वीभूषण नामक नगर में अरिदमन नामक राजा राज्य करता था जहाँ प्रजा आपस में एक दूसरे के प्रति, प्रीति भाव से निवास करती थी। राजा अरिदमन दान, पूजा, भक्ति आदि में अति प्रवीण थे। जहाँ पर अनेक सुन्दर एवं विशाल प्रतिमाओं से सुशोभित एवं अनेक तोरण गोपुर आदि से सहित जिनालय थे। राजा अरिदमन की कई रानियाँ थी उनमें से सिंगारवती नाम की पटरानी अत्यंत सुन्दर, शीलवती एवं जिनेन्द्र भगवान की भक्ति में परायण थी।

राजा अरिदमन राजनीति के गुणों में निपुण एवं राजकार्यों में पारंगत थे। उनका मति निवास नाम का अत्यंत चतुर मंत्री था। वहीं देव, शास्त्र, गुरु का श्रद्धानी एवं राजा अरिदमन का मित्र बुद्धि नामक श्रेष्ठी भी निवास करता था।

पृथ्वीपुर नगर में विष्णुभट्ट नाम का विद्वान था जो वेदों में पारंगत था; परन्तु अशुभ कर्मों के उदय से उसे षट् कर्मों को करके जीविका उपार्जन करनी पड़ती थी। उसकी सावित्री नाम की अत्यंत कुरूपनी एवं अत्यंत कलह प्रिय पत्नि थी जिससे अनेक पुत्रियाँ हुईं। वे सभी कर्म करने में शूर थीं

तथा धार्मिक कार्यों में उनकी रुचि नहीं थी जिससे पाप का पलड़ा भारी हो गया और ब्राह्मण के घर में दरिद्रता ने डेरा डाल लिया। जो कुछ ब्राह्मण कमा कर या भिक्षा में लेकर आता उससे परिवार के सदस्यों की भोजन पूर्ति होना ही दुर्लभ हो गई जिससे परेशान होकर ब्राह्मण ने विचार किया कि जहाँ इस तरह की कलह होती है वहाँ दरिद्रता ही निवास करती है। जिसकी संतान विनय हीन एवं धर्म कर्म से विहीन हो वहाँ कभी लक्ष्मी निवास नहीं करती। यह सोचकर ब्राह्मण एक दिन शाम के समय अपना घर छोड़कर दूर देश की ओर चल दिया। चलते-चलते प्रातःकाल की बेला में ही एक उद्यान में पहुँचा जो अत्यन्त सुन्दर वृक्षों एवं पुष्पों से सुशोभित था। उद्यान में सप्तपर्ण वृक्ष के नीचे शिला पर विषय वांछा से रहित निर्मल चित्त शील भूषण आचार्य संघ सहित विराजमान थे। मुनि की प्रसन्नचित्त मुद्रा को देखकर विष्णु भट्ट ब्राह्मण भी गुरु चरणों में प्रणाम कर उनके पास बैठ गया और निवेदन करने लगा।

हे मुनिराज! मैं बहुत दुखी हूँ, दरिद्री हूँ, कर्मों का सताया हुआ हूँ। आपके चरणों में रहकर अपने दुखों से मुक्ती प्राप्त करना चाहता हूँ। हे गुरुदेव! आप ही मुझे इन घोर दुःखों से छुटकारा दिला सकते हैं।

श्री शीलभूषण मुनिराज ने विष्णु भट्ट ब्राह्मण को श्रावक धर्म का उपदेश देते हुए सभी व्रतों में श्रेष्ठ पुरन्दर व्रत की विधि एवं उसका फल बताते कहा अगर दरिद्रता (गरीबी) दूर कर सुखी होना चाहते हो तो यह श्रेष्ठ व्रत श्री जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक, पूजन करो जिससे तुम्हारे जीवन में आने वाली परेशानियाँ दूर हो जायेगीं।

तब विष्णु भट्ट ब्राह्मण ने शीलभूषण मुनि के द्वारा दिए गए धर्म के उपदेश को सुनकर श्री जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक जल, दूध, दही, घी, इक्षु रस, केशर आदि पंचामृत रसों से कर श्री जिनेन्द्र भगवान की अष्ट द्रव्य से विधि पूर्वक पूजन की एवं रात्रि के समय चारों प्रकार का आहार जीवन पर्यंत के लिए त्याग किया।

श्री शीलभूषण मुनि के द्वारा पुरन्दर व्रत की विधि का व्याख्यान किया गया जो इस प्रकार है- किसी भी महिने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा का उपवास द्वितीया का एकाशन ऐसे ही एक दिन उपवास, एक एकाशन, शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक सभी रसों घी, नमक, तेल, दही, दूध, हरी, मीठा, का त्याग कर यह व्रत उत्तम विधि से किया जाता है। मध्यम विधि एक उपवास, चार एकाशन एक उपवास, एक एकाशन, शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी

तक किया जाता है। जघन्य विधि में एक उपवास, छः एकाशन, एक उपवास इस प्रकार शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी तक किया जाता है तथा दिन में तीन बार 108 बार णमोकार महामंत्र का जाप एकान्त स्थान में बैठकर किया जाता है तथा व्रत के दिन तेल मर्दन, इत्र, दत्तधावन आदि शरीर को श्रृंगारित करने वाली क्रियाओं का त्याग कर जिनालय में रहकर आत्मा के शुद्ध-बुद्ध, चैतन्य धर्म का स्मरण करना चाहिए। मंदिर जी में चँदोवा, शास्त्र, जिनवाणी, पूजन सामग्री पूजा अभिषेक आदि के बर्तन झारी, अलमारी आदि दान में देना चाहिए

इस प्रकार उत्तम विधि से पूजन, अभिषेक, दान आदि के साथ विष्णु भट्ट ब्राह्मण ने पुरन्दर व्रत करना प्रारंभ किया। ब्राह्मण की धर्म के प्रति श्रद्धा को देखकर विद्याधरों में श्रेष्ठ विद्याधर हेमप्रभ ने ब्राह्मण की प्रशंसा की और सारे अधीनस्थ विद्याधरों के बीच ले जाकर अनेक प्रकार के दिव्य वस्त्र, आभूषण एवं कीमती वस्तुएँ देकर ब्राह्मण का सम्मान किया तथा धर्मानुरागी ब्राह्मण से स्नेह हो जाने के कारण उसे अपने विमान में बैठाकर ऊँचे विजयार्द्ध पर्वत पर स्थित भव्य स्वर्ण और रत्नमयी जिनबिम्ब एवं जिनालयों की वन्दना कराने हेतु ले गया।

तत्पश्चात विष्णु भट्ट ब्राह्मण जब पृथ्वी भूषण नगर लौटा तो पुरन्दर व्रत को उत्तम विधि से करने के फल से शीघ्र ही धन सम्पत्ति एवं संतान से सुखी हो गया।

एक दिन सिद्धकूट जिनालय में दोंनो श्रेणी के राजा अरिदमन (भूचर) एवं विद्याधर हेमप्रभ (खगचर) मुनि के द्वारा बताए गए फल को सुनकर विष्णु भट्ट ब्राह्मण के साथ शीलभूषण मुनि के पास पहुँचे। मुनि श्री के उपदेश को सुनकर संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो मुनि हो गए तथा विष्णु भट्ट ब्राह्मण जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर आत्म चिंतन में लीन हो समाधि सहित मरण कर प्रथम स्वर्ग का एक भवावतारी सौधर्म इन्द्र हुआ

इस प्रकार भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि में पुरन्दर व्रत की विधिवत कथा को सुनकर अनेक श्रावकों ने पुरन्दर व्रत धारण कर अपनी मनोकामना पूर्ण की। अंत में धर्म के विशद प्रभाव से स्वर्ग एवं मोक्ष के सुख को प्राप्त किया।

इसी प्रकार धर्म और उसके फल को जानकर सभी भव्य बन्धु अपने जीवन में पुरन्दर व्रत कर संसारिक सम्पत्ति से सुखी होकर एक दिन मोक्षसुख को प्राप्त करें यही मेरी भावना है।

ब्र. ज्योति दीदी
संघस्थ आचार्य विशद सागर जी महाराज

मंगलाचरण स्तवन

मंगलम् अरहंत देवाय, मंगलं सिद्ध स्वामिनः।
मंगलम् आचार्योपाध्याय, मंगलम् सर्वसाधवः॥
मंगलम् जैन धर्माय, मंगलम् जैन आगमः।
मंगलम् चैत्यालयं सर्वं, मंगलं चैत्य सर्वदः॥

दोहा

मंगलमय चौबीस जिन, मंगलगणधर देव।
मंगलमय जिन संत हैं, तीनों लोक सदैव॥
महिमा जिनकी है अगम, गुण का है ना पार।
जिनकी अर्चा से विशद, हो जाए उद्धार॥

चौपाई

मिथ्यातम के नाशन हारी, चौबिस तीर्थंकर परिहारी।
गौतमादि ऋद्धी के धारी, सर्व ऋद्धि जग मंगलकारी॥
श्रेणिक राज विनय कर भाई, प्रश्न किए अनुपम सुखदायी।
कहा पुरन्दर व्रत शुभकारी, जिसकी महिमा है मनहारी॥
व्रत का फल किसने क्या पाया, गणधर जी ने यही बताया।
रम्यक् देश रहा शुभकारी, विष्णु भट्ट द्विज ज्ञान पुजारी॥
सावित्री थी जिसकी नारी, जो अत्यंत रही कलिहारी।
मुनी शीलभूषण कहलाए, जिनके दर्शन द्विज ने पाए॥
सुनकर के गुरुवर की वाणी, जो कहलाई जग कल्याणी।
करो पुरन्दर व्रत हे भाई, जो है धन वैभव सुखदायी॥
व्रत पालन में चित्त लगाया, जिसका फल ब्राह्मण ने पाया।
आई जिसके घर खुशहाली, विप्र बना अति वैभवशाली॥

दोहा- करें पुरन्दर व्रत विशद, शुभ भावों के साथ।
धन वैभव सौभाग्य पा, बनें श्री के नाथ॥

श्री पुरन्दर व्रत विधान पूजा

स्थापना

श्रीयुत ऋद्धी धारी जिनवर, गणधर पूजित जिन तीर्थेश।
तीन लोक में वन्दनीय प्रभु, शत इन्द्रों से पूज्य विशेष॥
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि प्रदायक, करने वाले जग कल्याण।
ऋषभादिक चौबिस तीर्थंकर, का हम करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिन अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

होती जय जयकार जगत में, जिनका गाते हैं यश गान।
निर्मल नीर से अर्चा करके, सम्यक् श्रद्धा जगे महान॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ज्योति उद्योतित होती, मोह तिमिर हरने वाले।
चन्दन से पूजा करते हैं, भक्त चरण के मतवाले॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर विद्याधर आकर के, करते हैं सम्यक् अर्चन।
अक्षत से पूजा करते हैं, जिन पद में करते वन्दन॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से तारण हारे, मोक्ष महल ले जाते हैं।
पुष्प मालिका से पूजा कर, शिव समृद्धी पाते हैं॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के ज्ञेय आपके, ज्ञान में सब झलकाए हैं।
शुभ नैवेद्य बना कर पूजा, करने को तव आये हैं॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहपास की अग्नि जलाकर, भू मण्डल को त्रस्त करें।
विशद ज्ञान का दीप जले अब, मोह अन्ध को अस्त करें॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि से नश जाती है, भव की सारी पीड़ाएँ।
अष्ट कर्म यह करा रहे हैं, जग में अगणित क्रीड़ाएँ॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, विपुल सौर्य प्राणी पाते।
फल से अर्चा करने वाले, मोक्ष महा पद पा जाते॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक पद की अभिलाषा से, कर्मादिक पर वार किया।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, स्वयं आप उपकार किया॥
ऋषभादिक चौबीसों जिन की, अर्चा करते महति महान।
विशद भाव से नाथ! आपका, आज यहाँ करते गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
रत्नत्रय धारी विशद, करें आत्म उद्धार॥

शान्तये शांतिधारा

पुष्पित पुष्पों से विशद, होवे गंध महान।
पुष्पांजलि के भाव से, करें जीव कल्याण॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा– **पिण्डाक्षर स्ववर्ग के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।**
पुष्पांजलि करते प्रथम, पाने स्वपद अनर्घ्य॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रातिहार्य बीजाक्षर (दोहा)

पिण्डाक्षर स्ववर्ग युत, अग्नि बिन्दु संयुक्त।
सुरतरु सम फलप्रद विशद, हं बीजाक्षर युक्त॥1॥

ॐ ह्रीं हं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु संयुक्त शुभ, पिण्डाक्षर स्ववर्ग।
भं बीजाक्षर पूजते, पाने को अपवर्ग॥2॥

ॐ ह्रीं भं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिण्डाक्षर स्ववर्ग युत, अग्नि बिन्दु के साथ।
मं बीजाक्षर है परम, पूज रहे हे नाथ!॥3॥

ॐ ह्रीं मं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बीज से युक्त है, पिण्डाक्षर स्ववर्ग।
रं बीजाक्षर श्रेष्ठतम, पूज मिले अपवर्ग॥4॥

ॐ ह्रीं रं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु युत वर्ग स्व, पिण्डाक्षर शुभकार।
घं बीजाक्षर पूजते, पावन मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं घं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिण्डाक्षर स्ववर्ग युत, पावन अग्नी मान।
झं बीजाक्षर पूज्य है, तीनों लोक महान।।6।।

ॐ ह्रीं झं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु युत वर्ग है, पिण्डाक्षर स्ववर्ग।
सं बीजाक्षर पूजते, पाने हम अपवर्ग।।7।।

ॐ ह्रीं सं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि बिन्दु मय वर्ग स्व, पिण्डाक्षर मनहार।
खं बीजाक्षर विशद फल, दायक मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं खं बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह भादिक वसु वर्ण शुभ, हैं बीजाक्षर वान।
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट बीजाक्षर युक्त श्री जिनायनमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- **दोष अठारह से रहित, गुणधारी छियालीस।**
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम शीश।।

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि)

छियालीस मूलगुण

जन्म के अतिशय (नरेन्द्र छंद)

दश अतिशय पावें प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई।
'स्वेद रहित' जिनवर का तन है, अति पावन भाई।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु तन है 'मल मूत्र रहित' शुभ, अतिपावन भाई।
भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई।।

तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'समचतुस्र संस्थान' प्रभू का, सुंदर सुखदाई।
घट बढ़ अंग न होवे कोई, जिन की प्रभुताई।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं समचतुस्र संस्थान सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'वज्रवृषभ नाराच' संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल प्रभु, अतिशय प्रगटाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित परम 'सुगंधित श्री जिन, मनहर तन' पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित शरीर गुणयुक्त सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रूप सुसुंदर' महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'आठ अधिक इक सहस सुलक्षण', तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तर शतक लक्षण व्यंजन युक्त शरीर सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन में 'रक्त मनोहर', श्वेत वर्ण भाई।
यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त युक्त शरीर सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन का मन मोहित करती, 'हित-मित प्रिय वाणी'।
अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं हित मित प्रिय वचन सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जहाँ में 'अतिशयकारी, बल' जिनवर पाए।
भक्ति भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, 'विशद' ज्ञान धारी।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जन मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य सहजातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

(ताटंक छंद)

'सौ योजन दुर्भिक्ष न होवे', जहाँ प्रभु का आसन हो।
पापी कामी चोर न बहरे, जहाँ प्रभु का शासन हो।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।11।।

ॐ ह्रीं शत योजन सुभिक्षत्व घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय 'गमन आकाश' प्रभु का, यह अतिशय दिखलाते हैं।
नृत्यगान करते हैं सुर नर, मन में अति हर्षाते हैं।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व प्राणियों के मन में शुभ, 'दया भाव' आ जाता है।
प्रभु के आने से अदया का, नाम स्वयं खो जाता है।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर नर पशुकृत और अचेतन, 'कोई उपसर्ग नहीं होवें'।
महिमा है तीर्थंकर पद की, आप स्वयं सारे खोवें।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित है जग, बिन आहार नहीं रहते।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, 'कवलाहार नहीं' करते।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण के बीच विराजे, पूर्व दिशा सम्मुख होवें।
'चतुर्दिशा में दर्शन हो' शुभ, भव्य जीव जड़ता खोवें।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशायां चतुर्मुखातिशय युक्त घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सब विद्या के ईश्वर' हैं प्रभु, सर्व लोक के अधीपती।
सुर नरेन्द्र चरणों आ झुकते, गणधर मुनिवर और यती।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं विद्याधिपतित्वातिशययुक्त घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'छाया रहित प्रभु का तन' शुभ, कैसा विस्मयकारी है।
मूर्त पुद्गलों से निर्मित है, सुन्दर अरु मनहारी है।।

तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥18॥

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'बढ़े नहीं नख केश' प्रभु के, ज्यों के त्यों ही रहते हैं।
तीर्थंकर जिन जिनवाणी में, तीन काल यह कहते हैं॥
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥19॥

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्निमेष दृग' रहते जिनके, नहीं झपकते पलक कभी।
नाशादृष्टी रहे सदा ही, ऐसा कहते देव सभी॥
तीर्थंकर पदवी के धारी, ज्ञान के अतिशय पाए हैं।
जिनके चरणों में यह पावन, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥20॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षय-जातिशयधारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

छन्द शम्भू

शुभ दिव्य देशना जिनवर की, 'सर्वार्धमागधी भाषा' में।
यह देवों का अतिशय मानो, समझो मागध परिभाषा में॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वार्धमागधीभाषादेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़ें, जन जन में 'मैत्री भाव' रहे।
न बैर विरोध रहे क्षणभर, जग में खुशियों की धार बहे॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥22॥

ॐ ह्रीं श्री सवजीवमैत्रीभावदेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का गमन जहाँ होता, तो 'सर्व दिशाएँ हो निर्मल'।
शुभ देव सभी अतिशय करते, धो देते हैं सारा कलमल॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥23॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वदिग्निर्मलत्वदेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण जिन का लगते, हो जाए तब 'निर्मल आकाश'।
चमत्कार देवों का मानों, करते सब दोषों का नाश॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥24॥

ॐ ह्रीं श्री शरदकालवन्निर्मलगगनदेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण प्रभु का आते ही, 'खिलते एक साथ फल-फूल'।
भर जाते हैं खेत धान्य से, तरुवर झुक जाते अनुकूल॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥25॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वर्तुफलादितरुपरिणामदेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण जहाँ पड़ जाते, 'भू कंचनवत' हो जाती है।
वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पणवत होती जाती है॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥26॥

ॐ ह्रीं श्री आदर्शतलप्रतिमारमणीयदेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मध्य ज्यों पग रखते सुर, 'स्वर्ण कमल रचते पावन'।
वह सात-सात आगे पीछे, इक मध्य पंचदश मनभावन॥
जिन तीर्थंकर के चरणों सुर, भक्ति करें अतिशयकारी।
हम अर्घ्य चढ़ाते यह पावन, मम जीवन हो मंगलकारी॥27॥

ॐ ह्रीं श्री चरणकमलतलरचितस्वर्णदेवोपुनीतातिशय धारक सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलकर, 'भक्ती से जय जयकार करें'।
आओ-आओ सब भक्ति करें, वे चारों ओर पुकार करें॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥28॥

ॐ ह्रीं श्री एतैतैति चतुर्णिकायामरपरापराह्वानदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलती है 'मन्द सुगन्ध पवन', सब व्याधी विषम विनाश करे।
जन-जन को अति सुरभित करती, मन में अतिशय उल्लास भरे॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥29॥

ॐ ह्रीं श्री सुगन्धितविहरणमनुगतवायुत्वदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुर वृष्टि करें गंधोदक' की, मन में अति मंगल मोद भरें।
ये चमत्कार शुभ भक्ती का, वह भक्ती मेघ कुमार करें॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥30॥

ॐ ह्रीं श्री मेघकुमारकृतगन्धोदकवृष्टिदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पवन कुमार देव मिलकर, शुभ अतिशय खूब दिखाते हैं।
'धूली कंटक से रहित भूमि' पर, प्रभु का गमन कराते हैं॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥31॥

ॐ ह्रीं श्री वायुकुमारोपशमितधूलिकण्टकादिदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभ परमानन्द मिले जन-जन को', मन आनन्दित हो जाता है।
तव रोम-रोम पुलकित हो जाए, जो प्रभु का दर्शन पाता है॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥32॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभ धर्म चक्र को सिर पर रखकर', यक्ष चलें आगे-आगे।
यह है प्रताप अतिशयकारी, शुभ बाधा स्वयं दूर भागे॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥33॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कलश ताल दर्पण प्रतीक शुभ, छत्र चँवर ध्वज अरु भृंगार।
शुभ 'मंगल द्रव्य आठ' देवों के, होते हैं जग में सुखकार॥
सुर लोक से आकर देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम जीवन हो मंगलकारी॥34॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टमंगलद्रव्यदेवोपुनीतातिशय सर्वकर्मबन्धन विमुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय

(वेसरी छन्द)

'ज्ञानानन्त' प्रभु प्रगटाए, ज्ञानावरणी कर्म नशाए।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥35॥

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दर्श अनन्त' प्राप्त कर स्वामी, हुए लोक में अन्तर्यामी।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥36॥

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुखानन्त' प्रगटाने वाले, अर्हत् जग में रहे निराले।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥37॥

ॐ ह्रीं अनन्त सुख सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीर्यानन्त' के धारी गाये, अन्तराय प्रभु कर्म नशाए।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी॥38॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(नरेन्द्र छन्द)

शत इन्द्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु पाये।
तरु 'अशोक' शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटाये॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥39॥

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सघन 'पुष्प की वृष्टी' करके, नभ में सुर हर्षाते।
ऊर्ध्वमुखी हो पुष्प बरसते, जिन महिमा दिखलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥40॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव शरण में हुए अलंकृत, 'चौसठ चँवर' ढुराते।
श्वेत चवर मे नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥41॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टि चंवर सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म का क्षय होते ही, 'भामण्डल' प्रगटावे।
कोटि सूर्य की कांती जिसके, आगे भी शर्मावे॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥42॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आओ-आओ जग के प्राणी, प्रभु जगाने आये।
श्रेष्ठ 'दुन्दुभी' के द्वारा शुभ, वाद्य बजा के गाये॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥43॥

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीन लोक के ईश प्रभू हैं, 'तीन छत्र' बतलाते।
गुरु लघुतम लघु ऊर्ध्व में क्रमशः, धवल कांति फैलाते॥

शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥44॥

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हत के 'गम्भीर वचन' शुभ, प्रमुदित होकर पाते।
मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥45॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण के मध्य रत्नमय, 'सिंहासन' मनहारी।
कमलासन पर अधर विराजे, अर्हत् जिन त्रिपुरारी॥
शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की हम महिमा गाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥46॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अठारह दोष रहित जिन के अर्घ्य

जो 'क्षुधा दोष' के धारी, जग में रहे दुखारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥47॥

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'तृषा दोष' को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥48॥

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'जन्म दोष' को पावें, वे मरकर फिर उपजावे।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥49॥

ॐ ह्रीं जन्मदोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'जरा दोष' भयकारी, दुख देता है जो भारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥50॥

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'विस्मय' करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए॥51॥

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अरति दोष' जग जाना दुखकारी इसको माना।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।52।।
ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रम करके जग के प्राणी, बहु 'खेद' करें अज्ञानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।53।।
ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
है 'रोग-दोष' दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।54।।
ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब इष्ट वियोग हो जाए, तब 'शोक' हृदय में आए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।55।।
ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'मद' में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानि।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।156।।
ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो 'मोह' दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।57।।
ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भय' सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।58।।
ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निद्रा' से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।59।।
ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चिंता' को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।60।।
ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तन से जब 'स्वेद' बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।61।।
ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'राग' आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।62।।
ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिसके मन 'द्वेष' समाए, वह कमठ रूप हो जाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।63।।
ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो 'मरण दोष' के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।64।।
ॐ ह्रीं मृत्यु दोष विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा– **'दोष अठारह' हीन है प्रभु छियालीस गुणवान।**
ऐसे जिन पद भक्ति में, मेरा विशद प्रणाम।।
ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशतगुण सहित अष्टादशदोष विनाशक श्री जिनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– **भय विरहित त्रय लब्धियाँ, दश धर्मों के ईश।**
परम पूज्य तीर्थेश पद, वन्दन करें ऋषीश।।
(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चौबीस भयादि के अर्घ्य

(चाल छन्द)

'इह लोकवर्ति भय' जानो, जो दुखकारी है मानो।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए।।1।।
ॐ ह्रीं इहलोकभय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पर लोकवर्ति भय' गाया, जिससे यह जीव सताया।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए।।2।।
ॐ ह्रीं परलोकभय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भय मरण' कहा दुखदायी, हम नाश करें हे भाई।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए।।3।।
ॐ ह्रीं मरणभय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भय आकस्मिक' जो खोवे, वह केवलज्ञानी होवे।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥4॥
ॐ ह्रीं आकस्मिक भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो 'सर्व शत्रु भय' नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥5॥
ॐ ह्रीं समस्त शत्रु भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भय शाकिन डाकिन कारी', व्यन्तरी का पूर्ण निवारी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥6॥
ॐ ह्रीं समस्त व्यन्तरी शाकनी डाकिनी कृत बाधा निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भय राक्षसादि का' भाई, ना रहे कोई दुखकारी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥7॥
ॐ ह्रीं राक्षसादि कृतोपसर्ग निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'भय असुरादिक का' स्वामी, हम नाश करें शिवगामी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥8॥
ॐ ह्रीं असुरादि कृतोपसर्ग निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'भय देव-देवी कृत' सारे, सद्ज्ञानी जीव निवारे।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥9॥
ॐ ह्रीं समस्त दुष्ट देव देवी कृतोपसर्ग निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भय सर्व जाति कृत' जानो, हो जाए नाश ये मानो।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥10॥
ॐ ह्रीं समस्त सर्व जाति भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'उपसर्ग घोर भय' नाशी, हों केवलज्ञान प्रकाशी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥11॥
ॐ ह्रीं महाघोर उपसर्ग निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्थावर जंगम सारी', विष बाधा भय परिहारी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥12॥
ॐ ह्रीं समस्तस्थावर जंगम विषादिबाधा निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुर्गम गिरि वन भू गाई', भय पूर्ण नाश हो भाई।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥13॥
ॐ ह्रीं दुर्गम पर्वतादि संजात बाधा निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
'अति विकट जलाशय' जानो, भय पूर्ण नाश हो मानो।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥14॥
ॐ ह्रीं अति विकट जलाशय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'दावानलादि भय' कोई, नश जाए भयंकर सोई।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥15॥
ॐ ह्रीं महा भयंकर दावानलादि भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'लुटंकादि उपद्रव' सारा, नश जाए प्रभू हमारा।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥16॥
ॐ ह्रीं लुटंकायुपद्रव भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'भय युद्ध निवारण' कारी, होते जिनवर अनगारी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥17॥
ॐ ह्रीं युद्ध भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महामारी रोग' नशाएँ, उसके भय से बच जाएँ।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥18॥
ॐ ह्रीं महामारी रोग भय विनाशक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
'दुर्भिक्ष आदि' नश जाए, भय से मुक्ती मिल जाए।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥19॥
ॐ ह्रीं दुर्भिक्ष भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भय कहा वेदना' भाई, जग जीवों को दुखदायी।
प्रभु भय को पूर्ण नशाए, हम पूजा करने आए॥20॥
ॐ ह्रीं वेदना भय निवारक श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

जो 'सम्यक् श्रद्धान' जगाएँ, दर्श विशुद्धी लब्धी पाएँ।
जिन पद जो भी पूज रचावें, वे इस भव से मुक्ती पावें॥21॥
ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन लब्धि प्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पढ़ते हैं जो श्री जिनवाणी, 'ज्ञान लब्धि' पावें वे प्राणी।
जिन पद जो भी पूज रचावें, वे इस भव से मुक्ती पावें॥22॥
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान लब्धि प्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सम्यक् चारित' लब्धी धारी, होते है साधू अनगारी।
जिन पद जो भी पूज रचावें, वे इस भव से मुक्ती पावें॥23॥
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र लब्धि प्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवर भय उपसर्ग निवारी, साधू त्रय लब्धी के धारी।
जिन पद जो भी पूज रचावें, वे इस भव से मुक्ती पावें॥24॥
ॐ ह्रीं भयोपसर्गादि दोष निवारक त्रय लब्धि प्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्म के अर्घ्य

(चौपाई)

क्रोध कषाए के जो परिहारी, होते 'उत्तम क्षमा' के धारी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥25॥
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मान कषाए त्यागने वाले, 'मार्दव धर्मी' कहे निराले।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥26॥
ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्राणी छोड़ें मायाचारी, होवें 'आर्जव धर्म' के धारी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥27॥
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोभ त्याग के धारी प्राणी, 'उत्तम शौच' धरें मुनि ज्ञानी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥28॥
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
असत् वचन जो तजने वाले, 'सत्य धर्म' के हैं रखवाले।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥29॥
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'उत्तम संयम' धर अनगारी, होते पापों के परिहारी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥30॥
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्वादशविध तप' तपते ज्ञानी, होते मुक्ति वधू के स्वामी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥31॥
ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चौबिस विध परिग्रह के त्यागी', होते हैं मुनिवर बड़भागी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥32॥
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'उत्तम आकिंचन' के धारी, परिग्रह के होते परिहारी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥33॥
ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो हैं आतम ब्रह्म विहारी, वे 'उत्तम ब्रह्मचर्य' के धारी।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥34॥
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मप्राप्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भय आदिक से रहित कहाएँ, रत्नत्रय दशधर्म जगाएँ।
मुनिवर रत्नत्रय को पाते, पावन केवलज्ञान जगाते॥
ॐ ह्रीं सर्वभ्योपसर्गादि दोष निवारक उत्तमक्षमादि दशधर्मप्राप्त श्री जिनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **पंच कल्याणक प्राप्त हैं, तीर्थंकर भगवान।**
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान॥

पंचकल्याणक के अर्घ्य

गर्भ कल्याणक अर्घ्य

दोहा– **द्वितीया कृष्ण आषाढ़ की, 'आदिनाथ' भगवान।**
सर्वार्थ सिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण॥1॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वदी अमावस जेठ की, पाए गर्भ कल्याण।
'अजितनाथ' का देव सब, किए विशद गुणगान॥2॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

फागुन सित आठें पाए, सुर गर्भ कल्याण मनाए।
'जिन सम्भव' अन्तर्यामी, हम चरणों करें नमामी॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल छठ पाए, 'अभिनन्दन' गर्भ में आए।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

श्रावण शुक्ला द्वितिया पाए, 'सुमतिनाथ' जी गर्भ में आए।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाए, मात पिता के भाग्य जगाए॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्म प्रभु' जी गर्भ में आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी॥6॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सित भादों पाए, चयकर 'सुपार्श्व जिन' आए।
उत्सव सब देव मनाए, जिनगृह आके हर्षाए॥7॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचे वदि चैत निराली, जिनगृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, 'चन्द्रप्रभु' गर्भ में आए॥8॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, 'श्री पुष्पदन्त' चय आये महान।
तब देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार॥9॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार॥10॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **श्री श्रेयनाथ भगवान, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।**
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का॥11॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गई माला-माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे॥12॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिला धन्य बनाए।
विमलनाथ जी गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए॥13॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि एकम तिथि जानो, गर्भागम प्रभु का पहिचानो।
देव रत्न वृष्टी करवाए, माँ के गर्भ का शोध कराए॥14॥

ॐ ह्रीं कार्तिक प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित वैशाख अष्टमी गाए, धर्मनाथ जी गर्भ में आए।
रत्नपुरी में रत्न सुवर्षे, सुरनर सभी वहाँ पे हर्षे॥15॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥16॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्धशम्भू छन्द)

श्रावण कृष्ण दशें को भाई, गर्भ में आए कुन्थु जिनेश।
दिव्य रत्न देवों ने आकर, पृथ्वी पर वर्षाए विशेष॥17॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी फागुन तृतिया शुभकार, गर्भ में आए अरह जिनेश।
दिव्य वर्षाए रत्न अपार, धरा पे आके इन्द्र विशेष॥18॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगलकार, देव नर चरण झुकाए शीश॥19॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥20॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

आश्विन वदि द्वितिया जानो, गर्भागम मंगल मानो।
सुर रत्न श्रेष्ठ वर्षाए, शुभ गर्भ कल्याण मनाए॥21॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥22॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।**
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण॥23॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली॥24॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म कल्याणक के अर्घ्य

'चैत कृष्ण नौमी' प्रभू, पाए जन्म कल्याण।
आदिनाथ का न्हवन कर, इन्द्र किए गुणगान॥25॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'माघ शुक्ल दशमी' प्रभू, अजितनाथ भगवान।
न्हवन कराकर मेरु पे, किए इन्द्र जय गान॥26॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'कार्तिक सित पूनम' गाई, जो जन्म की तिथि कहलाई।
मेरू पे न्हवन कराया, देवों ने हर्ष मनाया॥27॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बारस सित माघ' बताई, जनता सारी हर्षाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए॥28॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'चैत शुक्ल एकादशि' गाई, सुमतिनाथ जिन मंगलदायी।
जन्मे तीन ज्ञान के धारी, इन्द्र किए तब उत्सव भारी॥29॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, पद्मप्रभु की महिमा गाए॥30॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

द्वादशी जेठ सित गाई, जन्मे सुपार्श्व जिन भाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए॥31॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ॥32॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान॥33॥

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम॥34॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन वदि एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे॥35॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए॥36॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छन्द)

माघ शुक्ल की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए॥37॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी तिथि आयी, नगर अयोध्या बजी बधाई।
जन्मोत्सव तव देव मनाए, नृत्य गान कर बाद्य बजाये॥38॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, जन्म लिए भू पे त्रिपुरारी।
पाण्डुक वन अभिषेक कराए, देव सभी जयकार लगाये॥39॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥40॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मानव छन्द)

एकम सुदि वैशाख बताई, नगर हस्तिनापुर शुभकार।
जन्म कल्याणक देव मनाए, हुई धरा पर जय जयकार॥41॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि चतुर्दशी भगवान, जन्म ले किए जगत कल्याण।
बजाए भाँति-भाँति के वाद्य, बधाई किए नगर में आन॥42॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार॥43॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥44॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी अषाढ़ वदि गाई, जन्मे नमि मंगल दाई।
शत इन्द्र शरण में आए, जो जन्म कल्याण मनाए॥45॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥46॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।**
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ॥47॥

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की भाई, जन्मोत्सव की घड़ि आई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए॥48॥

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक के अर्घ्य

नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग।
चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग॥49॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी तिथी, पाए तप कल्याण।
इस जग का वैभव तजा, किए आत्म का ध्यान॥50॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जग जाना, संयम धर मुक्ती पाना।
मगशिर सित पूनम प्यारी, प्रभु बने आप अनगारी॥51॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।
वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे॥52॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

नौमी सित वैशाख बताई, संयम धारे जिस दिन भाई।
प्रभु वैराग की ज्योति जगाई, मुनिपद की तब बारी आई॥53॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए॥54॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

द्वादशी जेठ सित स्वामी, संयम धारे जगनामी।
वैराग्य हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया॥55॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना॥56॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग॥57॥

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥58॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।**
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब॥59॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने॥60॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छन्द)

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए॥61॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, दीक्षा धार हुए अनगारी।
देव पालकी स्वर्ग से लाए, प्रभु को दीक्षा वन पहुँचाए॥62॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पद के पथगामी।
माघ शुक्ल तेरस तिथि गाई, दीक्षा की पावन घड़ि आई॥63॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥64॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष वैशाख सु एकम, दीक्षा धारे कुन्थूनाथ।
कामदेव चक्री पद छोड़ा, तीर्थंकर पद पाए सनाथ॥65॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

जगा जिनके मन में वैराग, त्याग कर चले स्वजन परिवार।
रहा ना जिनके मन में राग, दशे सुदि मंगसिर तिथि शुभकार॥66॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग॥67॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥68॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी आषाढ़ वदि स्वामी, दीक्षा धारे शिवगामी।
मन में वैराग्य जगाए, वन में जा ध्यान लगाए॥69॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥70॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।**
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार॥71॥

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया॥72॥

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान कल्याणक के अर्घ्य

दोहा- **चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।**
फागुन वदि एकादशी, जग में हुई महान॥73॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी, पाए केवल ज्ञान।
दिव्य देशना दे प्रभू, किए जगत कल्याण॥74॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथ बताए, जिन केवल ज्ञान जगाए।
अज्ञान के मेघ हटाए, रवि केवल जो प्रगटाए॥75॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।
सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए॥76॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस शुभ पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।
समवशरण आ देव बनाए, दिव्य देशना आप सुनाए॥77॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभू जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए॥78॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि छठी निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।
अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रगटाए॥79॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए॥80॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतिया दाम छन्द)

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार॥81॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥82॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **पाए केवलज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।**
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे॥83॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों कृष्ण दोज को॥84॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए॥85॥

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश को जिन स्वामी, ज्ञान जगाए अन्तर्यामी।
सुर नर जय-जय कार लगाए, चरणों में नत शीश झुकाए॥86॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया आप नशाए, ऋद्धि सिद्धियाँ स्वामी पाए।
केवल ज्ञान का दीप जलाए, मुक्ती पथ की राह दिखाए॥87॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुँजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए॥88॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की तृतिया जानो, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
इन्द्र शरण में आये मिलकर, समवशरण सुर रचे महान॥89॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतिया दाम छन्द)

सुदी कार्तिक द्वादशी महान, प्रभु जी पाए केवल ज्ञान।
किए प्रभु जग में ज्ञान प्रकाश, बने तव भक्त चरण के दास॥90॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण॥91॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥92॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, उपदेश जीव तब पाए॥93॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥94॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **चैत कृष्ण तिथि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।**
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान॥95॥

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ॥96॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक के अर्घ्य

दोहा- माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हे कर्म विनाश।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास॥97॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पञ्चमी, पाए पद निर्वाण।
सिद्ध लोक में जा बसे, अजितनाथ भगवान॥98॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

षष्ठी सित चैत बखानी, प्रभु पाए शिव रजधानी।
कर्मों का किया सफाया, निज आतम सौख्य उपाया॥99॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया॥100॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

ग्यारस चैत शुक्ल की गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती पाई।
शिव पथ को तुमने अपनाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया॥101॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए॥102॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

फाल्गुन वदि साते जानो, जिन वर शिव पाए मानो।
सम्मेद शिखर से स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी॥103॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि साते पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥104॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतिया दाम छन्द)

अश्विन शुक्ला आठे ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव॥105॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठे जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥106॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।**
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से॥107॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद॥108॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी॥109॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावस तिथि शुभकारी, हुए प्रभू मुक्ती पथ धारी।
अपने आठों कर्म नशाए, मोक्ष महल में धाम बनाए॥110॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव में रमने वाले, कर्म नाश शिवपुर को चाले।
ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, गिर सम्मेद शिखर से भाई॥111॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥112॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख तिथी एकम को, कीन्हें प्रभु जी कर्म विनाश।
कूट ज्ञानधर से जिन स्वामी, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास॥113॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमावस चैत कृष्ण की खास, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
किए शिवपुर को प्रभू प्रयाण, किया शिवपुर में प्रभु ने वास॥114॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास॥115॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि द्वादशी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥116॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

चौदश वैशाख की गायी, मुक्ती पाए जिन भाई।
अपने सब कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए॥117॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठे आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥118॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।**
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण॥119॥

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए॥120॥

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **कर्म नाश करके सभी, तीर्थंकर चौबीस।**
शिव पथ के राही बने, हुए मोक्ष के ईश॥

ॐ ह्रीं पञ्चकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुरन्दर विधान महात्म्य के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

जीव पुरन्दर व्रत जो करते, उत्तम विधि के साथ महान।
वे ऐश्वर्य विभूती पावन, ऋषि लब्धि पावै गुणवान॥

स्वर्ग लोक के देव देवियाँ, आके करें विशद सम्मान।
अन्त में रत्नत्रय को पाके, प्राप्त करें प्राणी निर्वाण॥1॥

ॐ ह्रीं नवलब्धि सहित श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव सहित पूजा जिनेन्द्र की, करते हैं जो मंगलकार।
इन्द्र चक्रवर्ति आदिक का, वैभव पाते अपरम्पार॥
इस भव में सुख सम्पत्ति पाते, कर्म श्रृंखला करके नाश।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, करते सिद्ध शिला पर वास॥2॥

ॐ ह्रीं अचिन्त्य वैभव सहित श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अट्ठाइस मूलगुणों के धारी, रत्नत्रय के कोष महान।
द्वादश व्रत का पालन करते, देशव्रती श्रावक गुणवान॥
उत्तम कुल जाति को पाकर, स्वर्ग सुखों का करते भोग।
जन्म जरा मृत्यू का उनके, विशद पूर्णतः मिटता रोग॥3॥

ॐ ह्रीं अनुपम व्रत संयुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसनी चोर अधम पापी भी, पालन करने वाले धर्म।
रत्नत्रय का पालन करके, पूर्ण नाशते अपने कर्म॥
अंजन बना निरंजन भाई, उत्तम व्रत संयम को धार।
शिवपथ के राही बन जाएँ, हम भी बनकर के अनगार॥4॥

ॐ ह्रीं अनेकअभ्युदय समर्थ सेवाभावाय संयुक्त श्री जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल ले मनहार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हैं ये मंगलकार॥
नाथ! आपकी पूजा करके, करते हैं पावन गुणगान।
'विशद' भावना अन्तिम है यह, प्राप्त करें हम पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री परम चिद् भावाभ्युदययुक्त श्री जिनाय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(जाप)

ॐ ह्रीं पुरन्दरव्रताराध्य श्रीचतुर्विंशति जिनाय नमः।

जयमाला

दोहा- तीन लोक में पूज्य हैं, जिन तीर्थेश त्रिकाल।
सुव्रत पुरन्दर की यहाँ, गातें हैं जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

भव्य जीव रत्नत्रय पाकर, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सोलहकारण भव्य भावना, विशद भाव से भाते हैं॥

तीर्थंकर प्रकृति को पाके, पंचकल्याणक पाते हैं।
कर्म नाशकर केवलज्ञानी, हो शिवपुर को जाते हैं॥

आदिनाथ जी षट्कर्मों की, शिक्षा जग को दिए महान।
अजितनाथ जी कर्मों पर जय, करके पाए केवलज्ञान॥

सम्भव जिनवर भवदुख नाशी, जैन धर्म का किए प्रकाश।
अभिनन्दन के पद में वन्दन, करके होती पूरी आस॥

सुमतिनाथ जी सुमति प्रदायक, कहे लोक में मंगलकार।
पदम प्रभु जी मोह कर्म के, नाशी हुए हैं विस्मयकार॥

जिन सुपार्श्व हैं अघ के नाशी, करते हैं जग का कल्याण।
चन्द्रप्रभु जी चन्द्र कांति सम, देने वाले ज्ञान निधान॥

सुविधिनाथ विधि के दाता हैं, श्वेतवर्ण है कांतीमान।
शीतलनाथ जगत को शीतल, करने वाले हैं भगवान॥

श्रेयनाथ जी श्रेय प्रदायक, कहे गये हैं महति महान।
वासुपूज्य जग पूज्य कहे हैं, जिनका कौन करे गुणगान॥

विमल विपुल गुण पाने वाले, अनन्त चतुष्टय के स्वामी।
गुणानन्त के धारी गाए, जिनानन्त जग में नामी॥

धर्म ध्वजा फहराने वाले, धर्मनाथ हैं दया निधान।
शांतिनाथ जी शांति प्रदाता, शोभित होते स्वर्ण समान॥

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, कामदेव चक्री तीर्थेश।
अरहनाथ भी त्रय पद पाए, जिन पद पूजें सर्व सुरेश॥

कर्म मल्ल के जेता पावन, कहलाए श्री मल्लीनाथ।
मुनिसुव्रत सुव्रत के धारी, जिन पद झुका रहे हम माथ।।

सुर नर असुर नमित नमिपद में, चौंसठ ऋद्धीवान ऋशीष।
राज राजमति तजने वाले, नेमिनाथ जगतीपदि ईश।।

कमठोपसर्ग जयी पारस जिन, हुए लोक में मंगलकार।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर की जय जयकार।।

दोहा– **पूज्य पुरन्दर लोक में, पूज्य हुए भगवान।**
पूजा करते हम यहाँ, 'विशद' पाएँ निर्वाण।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त वृषभादिक महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पूज्य पुरन्दर व्रत करें, जो भक्ती के साथ।**
वे इस भव के भोग पा, बनें श्री के नाथ।।

इत्याशीर्वाद:

आचार्य श्री का अर्घ

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

ॐ नम: सिद्धेभ्य: श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्य: श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्या: श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते जयपुर नाम नगरे निर्वाण सम्वत् 2542 वि.सं. 2073 माघ मासे शुक्ल पक्षे दसमी शुक्रवासरे 'श्री पुरन्दर व्रत विधान' विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

चौबीस तीर्थंकर आरती

(तर्ज– मांई रि मांई...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्–2।।टेक।।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती.....
पदम् प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती.....
श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती.....
शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती.....
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती.....

श्री महावीर भगवान की आरती

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती, हो वीरा हम सब उतारे थारी आरती।।टेक।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
धन कुबेर ने खुश होकर के, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी आरती, हो वीरा...।।1।।
चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब, मन में हर्ष बढ़ावें।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावें।
सब मिल उतारे थारी आरती, हो वीरा...।।2।।
मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते हैं थारी आरती, हो वीरा...।।3।।
दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवलज्ञान जगाये।
कार्तिक कृष्ण अमावस को प्रभु, विशद मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है प्यारी।
जिनबिम्बों की करते हम सब आरती, हो वीरा...।।4।।